

छत्तीसगढ़ राज्य के सरगुजा जिले के कंवर जनजाति की सामाजिक-आर्थिक दशा : एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ. टिके सिंह (पीआई)

भूगोल अध्ययनशाला

डॉ. शिवेंद्र सिंह देवहरे (को पी आई)

जैविकी अध्ययनशाला

विश्वविद्यालय का नाम: पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर

पदनाम: सहायक प्राध्यापक

सारांश

कंवर जनजाति, छत्तीसगढ़ की एक मूल निवासी अनुसूचित जनजाति है, जो मुख्य रूप से सरगुजा जिले में निवास करती है। ऐतिहासिक रूप से वे महाभारत के कौरव वंश में अपनी वंशावली का पता लगाते हैं। परंपरागत रूप से कंवर लोग जमींदार किसान होते हैं, और कृषि उनकी प्राथमिक आजीविका होती है। वे मजदूरी जैसे द्वितीयक व्यवसायों में भी संलग्न होते हैं। समुदाय आठ अंतर्विवाही प्रभागों में संगठित है, जिनमें तंवर, कमलबंसी, पैकरा, दूध कंवर, राठिया, चांटी, चेरवा और रौतिया शामिल हैं। इन प्रभागों को आगे जानवरों और पौधों के नाम पर गोत्र में वर्गीकृत किया गया है— जैसे बघवा (बाघ), चिता (तेंदुआ), और भैंसा (भैंस)। उनकी सामाजिक संरचना पितृवंशीय, पितृसत्तात्मक और पितृस्थानीय है। कंवर जनजाति कई प्रकार के देवताओं की पूजा करती है, शासन के संदर्भ में, समुदाय एक नेता का चुनाव करता है, जिसे सामुदायिक परिषद का प्रमुख कहा जाता है, जो सामाजिक व्यवस्था की देखरेख करता है और बुजुर्ग सदस्यों द्वारा सहायता प्रदान की जाती है।

मुख्य शब्द: कृषि, गोत्र, सामाजिक संरचना, देवता, सामुदायिक शासन, सामाजिक-आर्थिक चुनौतियां।

परिचय

छत्तीसगढ़ की अनुसूचित जनजातियों में से एक मानी जाने वाली कंवर जनजाति, सरगुजा जिले में मुख्य रूप से निवास करने वाले एक विशिष्ट स्वदेशी समुदाय का प्रतिनिधित्व करती है। एक कृषि प्रधान समाज होने के नाते, कंवर पारंपरिक रूप से कृषि को अपनी प्राथमिक आजीविका के रूप में अपनाते रहे हैं, जिसके पूरक के रूप में श्रम और वन-आधारित संसाधन हैं। उनका सामाजिक संगठन अत्यधिक संरचित है, जिसमें आठ अंतर्विवाही प्रभाग और जानवरों और पौधों के नाम पर कई गोत्र शामिल हैं, जो एक समृद्ध सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत को दर्शाते हैं। ऐतिहासिक रूप से, इस

जनजाति ने एक पितृसत्तात्मक और पितृवंशीय सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखा है, जिसमें सामुदायिक शासन की देख रेख एक निर्वाचित नेता और वरिष्ठों की एक परिषद द्वारा की जाती है। इस जीवंत सांस्कृतिक पहचान के बावजूद, कंवर लोगों को लगातार सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिनमें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और बुनियादी ढाँचे तक सीमित पहुँच शामिल है, जो उनके समग्र विकास में बाधा डालती है। कंवर जनजाति का भौगोलिक अध्ययन न केवल उनके पर्यावरण, सामाजिक संगठन और आर्थिक प्रथाओं के बीच परस्पर क्रिया को उजागर करता है, बल्कि उनके जीवन स्तर में सुधार के उद्देश्य से नीतिगत हस्तक्षेपों के लिए महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि भी प्रदान करता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

कंवर जनजाति की उत्पत्ति

छत्तीसगढ़ के मूलनिवासी समुदायों में से एक कंवर जनजाति की उत्पत्ति प्राचीन काल से हुई है और इसकी जड़ें इस क्षेत्र के इतिहास में गहराई से समाई हुई हैं। कंवरों को भारत में अनुसूचित जनजाति के रूप में मान्यता प्राप्त है, जिससे उनकी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित रखने में मदद मिली है। मौखिक परंपराओं और लोक कथाओं से पता चलता है कि कंवर जनजाति सदियों से छत्तीसगढ़ के घने जंगलों और पहाड़ी इलाकों में निवास करती रही है और प्रकृति से घनिष्ठ रूप से जुड़ी अपनी जीवन शैली को बनाए रखती रही है। ऐतिहासिक अभिलेखों और मानवशास्त्रीय अध्ययनों से संकेत मिलता है कि कंवर पारंपरिक रूप से शिकारी-संग्राहक थे और बाद में उन्होंने स्थायी कृषि की ओर रुख किया और अपने पर्यावरण के अनुकूल स्थायी पद्धतियों का विकास किया।

प्रवासन पैटर्न और बस्ती क्षेत्र

कंवर जनजाति के प्रवासन पैटर्न की पहचान मध्य भारतीय पठार के पार उनके आवागमन से होती है। सदियों से, कंवर लोग कृषि के लिए उपजाऊ भूमि और बेहतर जीवन स्थितियों की तलाश में इस क्षेत्र में प्रवास करते रहे हैं। ये प्रवास अक्सर पर्यावरणीय कारकों, जैसे पानी और कृषि योग्य भूमि की उपलब्धता, के साथ-साथ सामाजिक और राजनीतिक दबावों से प्रभावित होते थे। कंवर जनजाति के मुख्य निवास क्षेत्र छत्तीसगढ़ के कोरबा, बिलासपुर, रायगढ़ और सरगुजा जिलों में हैं। इन क्षेत्रों की विशेषता वन भूमि और कृषि क्षेत्रों का मिश्रण है, जो कंवर जनजाति की पारंपरिक आजीविका का

आधार है। इस जनजाति की बस्तियाँ आम तौर पर छोटी होती हैं, जिनमें परिवारों के समूह होते हैं जो एक-दूसरे से जुड़े समुदायों का निर्माण करते हैं।

अन्य समुदायों और प्रभावों के साथ ऐतिहासिक अंतःक्रियाएँ

इतिहास में कंवर जनजाति ने विभिन्न अन्य समुदायों और बाहरी प्रभावों के साथ अंतःक्रिया की है, जिसने उनके सामाजिक-सांस्कृतिक विकास को आकार दिया है। इन अंतःक्रियाओं में पड़ोसी जनजातियों के साथ व्यापारिक संबंध और क्षेत्रीय बाजारों में भागीदारी शामिल है, जिसने कंवरों को नई वस्तुओं और सांस्कृतिक प्रथाओं से परिचित कराया। औपनिवेशिक और उत्तर-औपनिवेशिक काल में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए, क्योंकि सरकारी नीतियों और विकास परियोजनाओं ने उनकी पारंपरिक जीवनशैली को प्रभावित किया। औपचारिक शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा प्रणालियों की शुरुआत, साथ ही भूमि सुधारों ने कंवर समुदाय पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के प्रभाव डाले हैं। इन प्रभावों के बावजूद, कंवर अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने में कामयाब रहे हैं, अपनी मूल परंपराओं और मूल्यों को संरक्षित करते हुए परिवर्तनों के साथ तालमेल बिठाते रहे हैं। यह खंड कंवर जनजाति के ऐतिहासिक संदर्भ की एक आधारभूत समझ प्रदान करता है, जो उनकी वर्तमान सामाजिक और सांस्कृतिक गतिशीलता को समझने के लिए आवश्यक है।

उद्देश्य

1. छत्तीसगढ़ राज्य के सरगुजा जिले के कंवर जनजाति की सांस्कृतिक स्वरूप का अध्ययन करना।
2. छत्तीसगढ़ राज्य के सरगुजा जिले के कंवर जनजाति की सामाजिक-आर्थिक दशाएँ का अध्ययन करना।

क्रियाविधि

सभी सर्वेक्षण किए गए तथ्यों और आंकड़ों को ध्यान में रखते हुए, यह वर्तमान अध्ययन निम्नलिखित रूपरेखा प्रस्तुत करता है –

प्राथमिक स्रोत:

छत्तीसगढ़ राज्य के सरगुजा जिले के चयनित सात विकासखंडों में से सात विकासखंडों के उन क्षेत्रों की पहचान की गई जहाँ कंवर जनजाति के लोग अपने मूल रूप में निवासरत् हैं। कंवर जनजाति की बहुलता के आधार पर उन्हें कोटि समूहों में रखी गई तथा सात विकासखंडों से चार-चार ग्राम उद्देश्यपूर्ण दैवनिदर्शन विधि से चयन किया गया। इस प्रकार जिले के सात विकासखंड— अंबिकापुर, सीतापुर, लुण्ड्रा, लखनपुर, मैनपाट, बतौली एवं उदयपुर से चार-चार गांव सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र से कुल 28 ग्रामों का चयन किया गया। चयनित प्रतिदर्श ग्रामों के सभी कंवर जनजाति परिवारों का 71 प्रतिशत जानकारी अनुसूची के माध्यम से प्राप्त की गई। इस तरह जिले के कुल 1665 परिवारों को अध्ययन में लिया गया है। उनसे उनकी पारिवारिक स्थिति, सामाजिक, आर्थिक संपत्ति एवं स्थिति, शैक्षिक और सांस्कृतिक जीवन प्रतिरूप के बारे में साक्षात्कार लिया गया।

केंद्रित समूह चर्चा की मदद से समुदाय से आँकड़े एकत्र किए गए। इसका उद्देश्य 15–20 लोगों को एक साथ बैठाकर उनसे जानकारी एकत्र करना और गाँवों की स्थिति के बारे में उनकी राय साझा करना था। इस तरह जिले के अंबिकापुर से 310, सीतापुर से 254, लुण्ड्रा से 212, लखनपुर से 189, मैनपाट से 197, बतौली से 246 एवं उदयपुर विकासखंड से 256 परिवारों कुल 1665 परिवारों से जानकारी एकत्र किया गया है। उदयपुर, लुण्ड्रा, एवं लखनपुर पठारी एवं वन क्षेत्र, सीतापुर एवं अंबिकापुर विकासखंड मैदानी क्षेत्र, मैनपाट विकासखंड पूर्णतः पाट एवं तराई क्षेत्र में तथा बतौली विकासखंड पठारी क्षेत्र में अवस्थित है। जिले में निवासरत कंवर जनजातियों के घर बिखरे हुए हैं और वे अपनी आजीविका के लिए मुख्यतः कृषि, कृषि मजदूरी एवं वनोपज पर निर्भर हैं। इन 28 गाँवों की कुल जनसंख्या 9324 है, जिनमें 4758 (51.1 प्रतिशत) पुरुष और 4566 (48.9 प्रतिशत) महिलाएँ हैं। कुल जनसंख्या का लिंगानुपात 959 है, जो 2011 की जनगणना के अनुसार राष्ट्रीय लिंगानुपात (978) से कम है।

द्वितीयक स्रोत

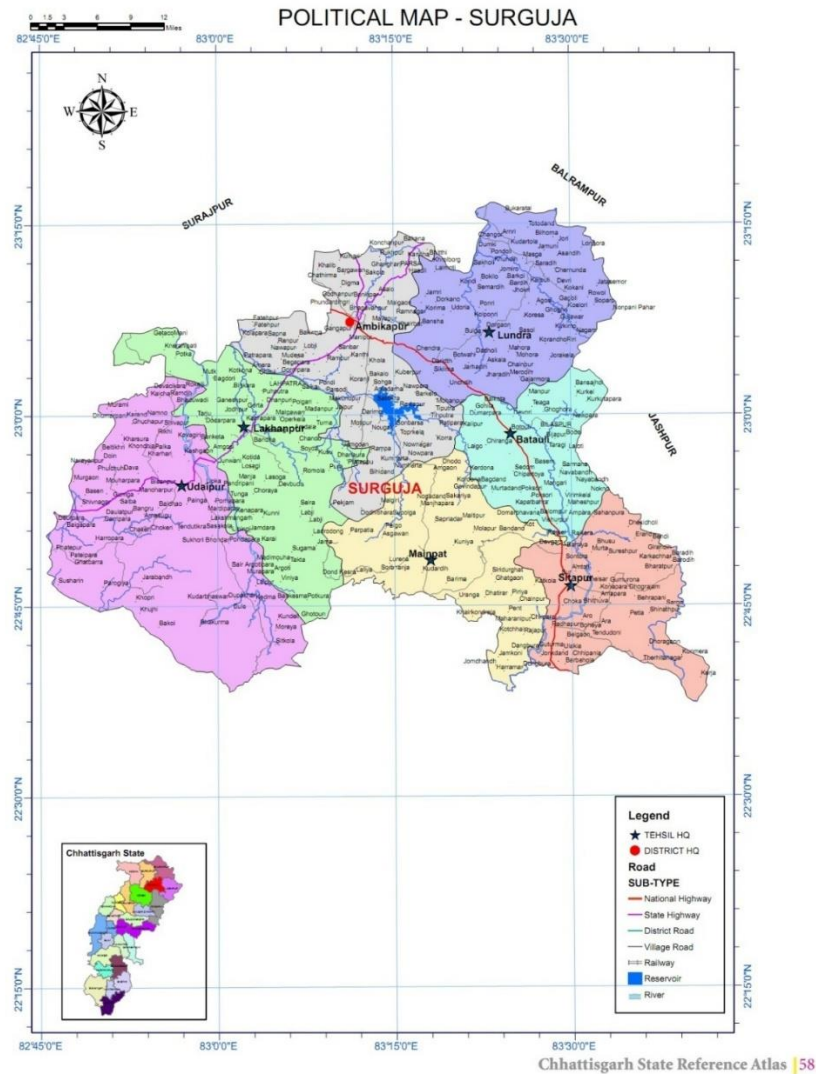
जनसंख्या सम्बन्धी द्वितीयक आँकड़ें जिला जनगणना पुस्तिका एवं जिला सांख्यिकी पुस्तिका सरगुजा जिले के मुख्यालय से प्राप्त किया गया। मौसम एवं जलवायु सम्बन्धित आँकड़ें मौसम विभाग (नागपुर) एवं आवश्यकतानुसार इंटरनेट का भी प्रयोग किया गया। ग्रामवार भूमि उपयोग संबंधी आँकड़े भूमि उपयोग गोस्वारा, फसल संबंधी आँकड़े खरीफ जिन्सवार एवं रबी जिन्सवार, सिंचाई संबंधी आँकड़े पटवारी खसरा तथा पशु संपदा संबंधी आँकड़े तितम्मा-मिलान से प्राप्त किया गया है। प्रकाशित

पुस्तकों और पत्रिकाओं, अप्रकाशित लेखों और दस्तावेजों से सहायता ली गई। उपरोक्त उद्देश्य के लिए जिला स्तर पर संबंधित सरकारी विभागों के अभिलेखों का भी संदर्भ लिया गया।

अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन का क्षेत्र सरगुजा जिला है। यह छत्तीसगढ़ के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित है। यहाँ की भौगोलिक स्थिति— ऊँचाई वाले पठार, पहाड़ियाँ और घने जंगल— आदिवासी जीवन के लिए विशिष्ट है। सरगुजा जिले की कुल जनसंख्या में अनुसूचित जनजातियों की भागीदारी लगभग 50 प्रतिशत है, जिसमें कंवर जनजाति एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरगुजा जिला छत्तीसगढ़ राज्य के उत्तरी भाग में है, जिसकी सीमा उड़ीसा, उत्तरप्रदेश, झारखंड और मध्यप्रदेश राज्यों से लगती है। सरगुजा जिला छत्तीसगढ़ प्रदेश के उत्तर में $22^{\circ}37'22''$ से $24^{\circ}16'17''$ उत्तरी अक्षांश तथा $82^{\circ}35'$ से $84^{\circ}51'$ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 15731 वर्ग कि.मी. है। 2011 की जनगणना के अनुसार प्रदेश की कुल जनसंख्या 840352 है। अनुसूचित जनजाति जनसंख्या 482027 है। 1991–2001 के मध्य सरगुजा जिले की जनसंख्या में 24.6 प्रतिशत वृद्धि हुई है। जिले में प्रति हजार पुरुषों के पीछे स्त्रियों की संख्या 980 है। जिले की 60.9 प्रतिशत जनसंख्या साक्षर है। जिले को 07 तहसीलों एवं 07 विकासखण्डों में विभाजित किया गया है।

जिले की 7 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में निवास करती है। अंबिकापुर नगर जिले का प्रशासनिक केन्द्र है। जनजाति लोग कृषि, वनोपज संग्रह तथा मजदूरी करके जीवन-यापन करती है। इनकी काफी बड़ी संख्या वन क्षेत्रों में निवास करती है। सरकारी नितियों व प्रयासों के कारण जनजातियों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। 887477 (94 प्रतिशत) जनसंख्या छत्तीसगढ़ राज्य में तथा 59195 (6 प्रतिशत) जनसंख्या मध्यप्रदेश, झारखंड, उड़ीसा एवं महाराष्ट्र में है। राज्य की पांच प्रमुख जनजातियों में यह दूसरी तथा पूरे भारत में 20 वीं बड़ी जनजाति है। इस जनजाति की राज्य में ग्रामीण जनसंख्या 94.65 प्रतिशत, लिंगानुपात 1011 तथा साक्षरता दर 67 प्रतिशत है। राज्य के कुल भौगोलिक (135133 वर्ग किमी.) क्षेत्रफल से अनुसूचित क्षेत्र (81862 वर्ग किमी.) 60.6 प्रतिशत है। बार (महादे) नृत्य इस जनजाति की प्रमुख नृत्य है।



आयु संरचना

आयु संरचना जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण भौतिक गुण है। इससे यह ज्ञान होता है कि भिन्न-भिन्न आयु वर्गों में जनसंख्या का प्रतिशत कितना है। अतः आयु संरचना विभिन्न आयु वर्गों के सापेक्षिक आकार की व्याख्या करती है। इससे किसी क्षेत्र में बच्चों की संख्या तथा क्रियाशील जनसंख्या के अनुपात का ज्ञान होता है।

सरगुजा जिले में सर्वेक्षित 1665 कंवर परिवारों की कुल जनसंख्या 9324 है। इनमें से पुरुषों की संख्या 4758 (51.1 प्रतिशत) एवं महिलाओं की संख्या 4566 (48.9 प्रतिशत) है। सर्वेक्षित परिवारों की कुल जनसंख्या में 5809 (62.30 प्रतिशत) 0 से 14 (बाल) आयु वर्ग के अंतर्गत है। 15 से 59 (प्रौढ़) आयु वर्ग में 3272 (35.09 प्रतिशत) जनसंख्या सम्मिलित है। 60 से अधिक उम्र (वृद्ध) आयु वर्ग के व्यक्तियों का प्रतिशत 2.61 है (सारणी 2.1)।

सारणी 2.1

सरगुजा जिला : सर्वेक्षित कंवर जनजाति की आयु संरचना, 2024

आयु वर्ग	पुरुष		महिला		कुल		लिंगानुपात
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
0-4	806	16.94	731	16.01	1537	16.48	907
5-9	440	9.25	454	9.94	894	9.59	1032
10-14	229	4.81	246	5.39	475	5.09	1074
0-14	1474	30.98	1429	31.30	2903	31.13	969
15-19	128	2.69	180	3.94	308	3.30	1406
20-24	214	4.50	402	8.80	616	6.61	1879
25-29	417	8.76	375	8.21	792	8.49	899
30-34	324	6.81	197	4.31	521	5.59	608
35-39	193	4.06	121	2.65	314	3.37	627
40-44	112	2.35	91	1.99	203	2.18	813
45-49	96	2.02	106	2.32	202	2.17	1104
50-54	116	2.44	74	1.62	190	2.04	638
55-59	66	1.39	60	1.31	126	1.35	909
60+	143	3.01	100	2.19	243	2.61	699
कुल	4758	100.00	4566	100.00	9324	100.00	960

स्रोत :- व्यक्तिगत सर्वेक्षण

लिंग अनुपात

लिंग संरचना पूर्णतः एक जैविक तथ्य है। “लिंग अनुपात न केवल प्रादेशिक विश्लेषण के लिए एक उपयोगी साधन है, बल्कि वर्तमान सामाजिक एवं आर्थिक दशाओं का एक महत्वपूर्ण सूचक भी होता है (फ्रेंकलिन, 1956)।” किसी जनसंख्या की लिंग संरचना का अध्ययन अत्यंत रुचिकर होता है, क्योंकि स्त्रियों एवं पुरुषों की भूमिका आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न होता है।

सरगुजा जिले के सर्वेक्षित कंवर परिवारों में प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या 960 है। विभिन्न आयु समूहों के लिंग संरचना में अंतर पाया गया है। 20 से 24 आयु वर्ग में लिंग अनुपात 1879 प्रति हजार है। 24 वर्ष (0-4 को छोड़कर) तक पुरुषों से महिलाओं की संख्या अधिक है। 24 वर्ष आयु के बाद (45-49 को छोड़कर) पुरुषों से महिलाओं की संख्या कम है। (सारणी 2.1)।

साक्षरता

किसी भी देश की जनसंख्या का गुणात्मक अध्ययन तथा समाज की सर्वांगिण प्रगति उस देश की शिक्षा के स्तर पर निर्भर करती है। शिक्षा न केवल सामाजिक-आर्थिक विकास प्रक्रिया में सहायक होती है अपितु इसका प्रसार किसी क्षेत्र अथवा समाज के सभी क्षेत्रों में विकास स्तर का द्योतक माना जाता है। शिक्षा के माध्यम से आधुनिकीकरण और विकास के वांछित परिवर्तनों को लाया जा सकता है। यद्यपि शिक्षा सामाजिक-आर्थिक प्रगति प्रारंभ नहीं करती है, किन्तु शिक्षा की कमी विकास प्रक्रिया में बाधा अवश्य उत्पन्न कर सकती है (गोसल, 1964)। “साक्षरता किसी क्षेत्र के सामाजिक एवं आर्थिक विकास की सूचक होती है। इससे किसी सामाज के आधुनिकीकरण के स्तर का पता चलता है” (डेविस, 1951)।

सरगुजा जिले के सर्वेक्षित 1665 परिवारों की 9324 जनसंख्या में 29.5 प्रतिशत जनसंख्या साक्षर है। यहाँ पुरुषों में 36.76 प्रतिशत और स्त्रियों में 22.47 प्रतिशत साक्षर है। साक्षर जनसंख्या में से 8.98 प्रतिशत प्राथमिक स्तर से कम साक्षर है। प्राथमिक स्तर तक शिक्षित पुरुष 9.46 प्रतिशत तथा स्त्री 7.29 प्रतिशत है। माध्यमिक और उससे अधिक शिक्षित जनसंख्या 1155 (12.4 प्रतिशत) है। इसमें पुरुषों में 818 (17.2 प्रतिशत) तथा स्त्रियों में 337 (7.4 प्रतिशत) है। पुरुषों से स्त्रियों में कम साक्षरता का प्रमुख कारण पुरुषों की तुलना में स्त्रियों को घरेलू काम-काज तक ही सीमित रखा गया तथा घर से बाहर आर्थिक कार्यों हेतु स्त्रियों पर सामाजिक एवं धार्मिक प्रतिबंध रहा। स्त्रियों का कम आयु में विवाह होना भी उनकी साक्षरता में बाधक रहा है (सारणी 2.2)।

सारणी 2.2

सरगुजा जिला : सर्वेक्षित कंवर जनजाति की शैक्षणिक स्तर, 2024

शैक्षणिक स्तर	पुरुष		महिला		कुल	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
स्नातकोत्तर	22	0.46	7	0.15	29	0.31
स्नातक	44	0.92	8	0.18	52	0.56
डिप्लोमा	1	0.02	1	0.02	2	0.02

उच्चतर माध्यमिक	149	3.13	33	0.72	182	1.95
हाई स्कूल	184	3.87	56	1.23	240	2.57
माध्यमिक	418	8.79	232	5.08	650	6.97
प्राथमिक	450	9.46	333	7.29	783	8.40
मात्र साक्षर	481	10.11	356	7.80	837	8.98
कुल साक्षर	1749	36.76	1026	22.47	2775	29.76
निरक्षर	3009	63.24	3540	77.53	6549	70.24
कुल	4758	100.00	4566	100.00	9324	100.00

स्रोत :- व्यक्तिगत सर्वेक्षण

सामाजिक संरचना और संगठन

गोत्र और नातेदारी प्रणालियाँ कंवर जनजाति की सामाजिक संरचना गोत्र और नातेदारी प्रणालियों में गहराई से निहित है, जो सामाजिक एकता और पहचान बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। गोत्र जनजाति के सामाजिक संगठन की मूलभूत इकाइयाँ हैं, जिनमें से प्रत्येक विशिष्ट पैतृक कुल देवताओं और देवी-देवताओं से जुड़ा होता है। ये गोत्र सामाजिक व्यवहार, विवाह नियमों और रीति-रिवाजों को निर्धारित करते हैं। नातेदारी संबंधों को अत्यधिक महत्व दिया जाता है, जिसमें विस्तृत पारिवारिक सहयोग और अपनेपन की भावना प्रदान करते हैं। नातेदारी शब्द और प्रथाएँ बड़ों के प्रति सम्मान और परिवार के सदस्यों के आपसी जुड़ाव पर जोर देती हैं। गोत्र प्रणाली एकता और सामूहिक उत्तरदायित्व की प्रबल भावना को बढ़ावा देती है, जिससे सभी सदस्यों का कल्याण सुनिश्चित होता है।

पारिवारिक गतिशीलता और घरेलू संरचनाएँ कंवर जनजाति में पारिवारिक गतिशीलता एक घनिष्ठ संरचना की विशेषता है, जहाँ बड़े परिवार अक्सर एक साथ या निकटता में रहते हैं। घरों में आमतौर पर एकल परिवार होते हैं, लेकिन विस्तारित परिवार के सदस्य अक्सर घर का हिस्सा बन जाते हैं, खासकर जरूरत के समय में। कंवर परिवार की इकाई पितृसत्तात्मक होती है, जिसमें सबसे बड़ा पुरुष आमतौर पर घर का मुखिया होता है। यह मुखिया महत्वपूर्ण निर्णय लेने, संसाधनों का प्रबंधन करने और सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए जिम्मेदार होता है। परिवार की भूमिकाएँ स्पष्ट रूप से परिभाषित होती हैं, और प्रत्येक सदस्य से उसके कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के बारे में स्पष्ट अपेक्षाएँ होती हैं। घरेलू संरचना पारस्परिक सहयोग और सामूहिक प्रयास को बढ़ावा देती है, खासकर कृषि गतिविधियों और अनुष्ठानों में।

लिंग भूमिकाएं और आयु-आधारित पदानुक्रम कंवर जनजाति के भीतर लिंग भूमिकाएं पारंपरिक रूप से अलग हैं, जिसमें पुरुषों और महिलाओं को विशिष्ट कार्य और जिम्मेदारियां आवंटित की गई हैं। पुरुष आम तौर पर कृषि, शिकार और सामुदायिक नेतृत्व जैसी गतिविधियों में शामिल होते हैं, जबकि महिलाएं घरेलू काम, बच्चों की परवरिश और भोजन तैयार करने का काम संभालती हैं। इन पारंपरिक भूमिकाओं के बावजूद, महिलाएं परिवार और समुदाय के भीतर महत्वपूर्ण प्रभाव रखती हैं, खासकर सांस्कृतिक और धार्मिक प्रथाओं में। आयु-आधारित पदानुक्रम भी प्रमुख हैं, जिसमें बुजुर्गों को उनके ज्ञान और अनुभव के लिए सम्मानित किया जाता है। बड़ों के प्रति सम्मान कंवर सामाजिक जीवन की आधारशिला है, और छोटे सदस्यों से अपेक्षा की जाती है कि वे उनका मार्गदर्शन लें और उनकी सलाह का पालन करें। ये पदानुक्रम एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं के हस्तांतरण को सुनिश्चित करते हैं।

सांस्कृतिक प्रथाएँ और परंपराएँ

कंवर जनजाति की सांस्कृतिक पहचान उनके पारंपरिक पोशाक, कला और शिल्प के माध्यम से स्पष्ट रूप से व्यक्त होती है। पारंपरिक कंवर वस्त्र स्थानीय जलवायु और जीवन शैली के अनुरूप तैयार किए जाते हैं, जो अक्सर स्थानीय रूप से प्राप्त सामग्रियों से बनाए जाते हैं। पुरुष आमतौर पर धोती और पगड़ी पहनते हैं, जबकि महिलाएं जीवंत पैटर्न और जटिल कढ़ाई वाली साड़ियों या लहंगे से सजती हैं। मोतियों, चांदी और अन्य प्राकृतिक सामग्रियों से बने आभूषण आमतौर पर पहने जाते हैं, जो सौंदर्य संबंधी प्राथमिकताओं और सांस्कृतिक महत्व दोनों को दर्शाते हैं। कंवर कला और शिल्प उनकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रमाण हैं। जनजाति अपने जटिल मनके के काम, रस्सी बुनाई के लिए जानी जाती है, जो न केवल कार्यात्मक हैं बल्कि प्रतीकात्मक अर्थ भी रखते हैं। इन शिल्पों को अक्सर प्रकृति, जानवरों और आध्यात्मिक मान्यताओं से प्रेरित रूपांकनों से सजाया जाता है।

संगीत, नृत्य और लोकगीत संगीत और नृत्य कंवर सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के अभिन्न अंग हैं, जो मनोरंजन और अनुष्ठानिक उद्देश्यों दोनों की पूर्ति करते हैं। पारंपरिक संगीत की विशेषता ढोल, बांसुरी और तार वाले वाद्ययंत्रों जैसे स्वदेशी वाद्ययंत्रों का उपयोग है। गीत अक्सर ऐतिहासिक घटनाओं, किंवदंतियों और नैतिक कथाओं का वर्णन करते हैं, जो जनजाति की सामूहिक स्मृति और मूल्यों को दर्शाते हैं। पारंपरिक बार नृत्य जैसे नृत्य रूप मुख्य रूप से दीपावली के समय गौरा-गौरी की आराधना के लिए करते हैं। ये नृत्य अत्यधिक प्रतीकात्मक होते हैं, जो अक्सर पौराणिक कथाओं का पुनरुत्पादन करते हैं या दैनिक जीवन के पहलुओं का चित्रण करते हैं। लयबद्ध चाल और जीवंत वेशभूषा कंवर

लोगों की सांप्रदायिक भावना और सांस्कृतिक गौरव को बढ़ाती है। कंवर जनजाति की विरासत को संरक्षित करने में लोकगीत और मौखिक परंपराएँ महत्वपूर्ण हैं। बुजुर्गों के नेतृत्व में कहानी सुनाने के सत्र, युवा पीढ़ी को मिथकों, किंवदंतियों और नैतिक पाठों से अवगत कराते हैं। ये कथाएँ न केवल मनोरंजन करती हैं बल्कि शिक्षा भी प्रदान करती हैं और पहचान और निरंतरता की भावना पैदा करती हैं। कंवर जनजाति की सांस्कृतिक प्रथाओं और परंपराओं की यह खोज एक जीवंत और दृढ़ समुदाय को उजागर करती है, जो पहनावे, कला, त्योहारों, संगीत, नृत्य और लोककथाओं के माध्यम से अपनी विरासत से गहराई से जुड़ा हुआ है। ये सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ उनकी पहचान बनाए रखने और अपनेपन की भावना को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

जाति के आध्यात्मिक और सामाजिक जीवन के महत्वपूर्ण घटक हैं। ये आयोजन सामुदायिक बंधनों को मजबूत करने महत्वपूर्ण जीवन चरणों को चिह्नित करने और आध्यात्मिक सद्भाव सुनिश्चित करने का काम करते हैं। प्रमुख त्यौहार अक्सर कृषि चक्रों के साथ मेल खाते हैं जैसे कि रोपण और कटाई का समय और भरपूर फसलों के लिए देवताओं के आशीर्वाद का आह्वान करने के लिए विस्तृत अनुष्ठान शामिल होते हैं। जन्म विवाह और मृत्यु के समारोह बड़ी श्रद्धा के साथ आयोजित किए जाते हैं, जिसमें आत्माओं और पूर्वजों का सम्मान करने के लिए विशिष्ट अनुष्ठान और प्रसाद शामिल होते हैं। त्योहारों की विशेषता सामुदायिक भोज, संगीत, नृत्य और पारंपरिक अनुष्ठानों का प्रदर्शन है, जो सांस्कृतिक पहचान और निरंतरता को मजबूत करते हैं। ये समारोह जनजाति को कृतज्ञता व्यक्त करने, सुरक्षा की मांग करने और अपनी सांस्कृतिक विरासत का जश्न मनाने का अवसर प्रदान करते हैं।

त्यौहार और समारोह कंवर जनजाति के सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन में त्यौहार और समारोह महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये आयोजन सामुदायिक मेलजोल, उत्सव और सांस्कृतिक मूल्यों के सुदृढीकरण के अवसर होते हैं। प्रमुख त्यौहारों में कृषि चक्र से जुड़े त्यौहार शामिल हैं, जैसे फसल उत्सव, जो विस्तृत अनुष्ठानों, भोज और सामूहिक नृत्यों द्वारा चिह्नित होते हैं। औपचारिक प्रथाएँ कंवर आध्यात्मिकता में गहराई से निहित हैं, जिनमें अक्सर देवताओं और पूर्वजों की आत्माओं को प्रसाद चढ़ाया जाता है। ये अनुष्ठान धार्मिक नेताओं या ओझाओं द्वारा किए जाते हैं, जो जनजाति के आध्यात्मिक कल्याण को बनाए रखने में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। ये समारोह जन्म, विवाह और मृत्यु जैसी जीवन की घटनाओं को चिह्नित करने और सांस्कृतिक परंपराओं और सामाजिक बंधनों की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक हैं।

कंवर जनजाति के आध्यात्मिक जीवन में ओझाओं और धार्मिक नेताओं की केंद्रीय भूमिका होती है। ये व्यक्ति जिन्हें अक्सर मानव और आत्मिक जगत के बीच मध्यस्थ माना जाता है, अनुष्ठानों, उपचार और भविष्यवाणियों के संचालन के लिए जिम्मेदार होते हैं। ओझाओं को पारंपरिक चिकित्सा आध्यात्मिक प्रथाओं और जनजाति के संबंध में गहन ज्ञान होता है, जिससे वे शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों तरह की बीमारियों का इलाज कर सकते हैं। वे त्योहारों और समारोहों के दौरान महत्वपूर्ण कार्य करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि अनुष्ठान सही ढंग से किए जाएँ और आत्माओं को प्रसन्न किया जाए।

धार्मिक नेता सांस्कृतिक ज्ञान के संरक्षण और प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, युवा पीढ़ी को जनजाति के मिथकों, रीति-रिवाजों और नैतिक मूल्यों की शिक्षा देते हैं। समुदाय में सामाजिक एकता और आध्यात्मिक कल्याण बनाए रखने के लिए उनका मार्गदर्शन आवश्यक है। यह खंड कंवर जनजाति की जटिल आध्यात्मिक मान्यताओं और प्रथाओं पर प्रकाश डालता है, और रीति-रिवाजों, त्योहारों के महत्व और ओझाओं एवं धार्मिक नेताओं की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देता है। ये तत्व जनजाति की सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक संरचना के लिए मौलिक हैं, जो परंपराओं के प्रसार और आध्यात्मिक सद्भाव को बनाए रखने में मदद करते हैं। लेकिन जनजातियों में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ने के कारण अपनी मूल धार्मिक रीति-रिवाजों से पिछड़ते जा रहे हैं।

वैवाहिक स्थिति

गाँव में कंवर जनजाति में विवाह को धार्मिक एवं सामाजिक संस्कार के रूप में माना जाता है। वैवाहिक स्थिति से तात्पर्य स्त्री एवं पुरुष का सामाजिक परम्परा के अनुरूप दाम्पत्य जीवन में बंधता है। विवाह, पृथकरण, तालाक एवं वैधत्य आदि जनसंख्या विकास को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। अध्ययन क्षेत्र में अविवाहित 4648 (49.85 प्रतिशत), विवाहित 4390 (47.08 प्रतिशत), विधुर 99 (1.06 प्रतिशत), विधवा 173 (1.86 प्रतिशत) तथा परित्यक्ता की संख्या 14 (0.15 प्रतिशत) है (सारणी 2.3)।

सारणी 2.3

सरगुजा जिला : सर्वेक्षित कंवर जनजाति की वैवाहिक स्तर, 2024

वैवाहिक स्तर	पुरुष		महिला		कुल	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
अविवाहित	2383	50.08	2265	49.61	4648	49.85
विवाहित	2266	47.63	2124	46.52	4390	47.08
विधुर	99	2.08	0	0.00	99	1.06
विधवा	0	0.00	173	3.79	173	1.86

परित्यक्ता	10	0.21	4	0.09	14	0.15
कुल	4758	100.00	4566	100.00	9324	100.00

स्रोत :- व्यक्तिगत सर्वेक्षण

परिवार का आकार

परिवार मनुष्य की सामाजिक जीवन का आधार स्तम्भ है, मुख्यतः परिवार के आकार एवं परिवार के प्रकार का अध्ययन किया जाता है। सरगुजा जिले में 369 (22.16 प्रतिशत) परिवारों में सदस्यों की संख्या 5 से कम है। इसी प्रकार 679 (407.8 प्रतिशत) परिवारों में सदस्यों की संख्या 5 से 6 है। 7 से 8 सदस्य वाले परिवार 394 (23.66 प्रतिशत) और 8 से अधिक सदस्य वाले परिवार मात्र 223 (13.39 प्रतिशत) है। जिले में परिवार के आकार में अंतर है। जिले में कंवर जनजाति में परिवार का औसत आकार 5.6 है (सारणी 2.4)।

सारणी 2.4

सरगुजा जिला : सर्वेक्षित कंवर जनजाति की परिवार का आकार, 2024

परिवार का आकार (व्यक्ति)	परिवार की संख्या	प्रतिशत
<5	369	22.16
5-6	679	40.78
7-8	394	23.66
≥8	223	13.39
कुल	1665	100.00
परिवार का औसत	5.6	

स्रोत :- व्यक्तिगत सर्वेक्षण

परिवार का प्रकार

संरचना की दृष्टि से परिवारों को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है—नाभिकीय तथा संयुक्त परिवार। कंवर जनजाति में पारिवारिक गतिशीलता एक घनिष्ठ संरचना की विशेषता है, जहाँ बड़े परिवार अक्सर एक साथ या निकटता में रहते हैं। घरों में आमतौर पर एकल परिवार होते हैं, लेकिन विस्तारित परिवार के सदस्य अक्सर घर का हिस्सा बन जाते हैं, खासकर जरूरत के समय में। कंवर परिवार की इकाई पितृसत्तात्मक होती है, जिसमें सबसे बड़ा पुरुष आमतौर पर घर का मुखिया होता

है। यह मुखिया महत्वपूर्ण निर्णय लेने, संसाधनों का प्रबंधन करने और सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए जिम्मेदार होता है। परिवार की भूमिकाएँ स्पष्ट रूप से परिभाषित होती हैं, और प्रत्येक सदस्य से उसके कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के बारे में स्पष्ट अपेक्षाएँ होती हैं। घरेलू संरचना पारस्परिक सहयोग और सामूहिक प्रयास को बढ़ावा देती है, खासकर कृषि गतिविधियों और अनुष्ठानों में।

सारणी 2.5

स्रोत :-

सरगुजा जिला : सर्वेक्षित कंवर जनजाति के परिवार का प्रकार, 2024

परिवार का प्रकार	परिवार की संख्या	प्रतिशत	जनसंख्या	प्रतिशत
संयुक्त	876	52.61	4906	52.62
नाभिकीय	789	47.39	4418	47.38
कुल	1665	100.00	9324	100.00

व्यक्तिगत सर्वेक्षण

जोत का आकार

कृषि और पशुपालन कंवर जनजाति की अर्थव्यवस्था की आधारशिला कृषि है, और अधिकांश परिवार कृषि गतिविधियों में लगे हुए हैं। यह जनजाति जीविका के लिए कृषि करती है, चावल, मक्का, बाजरा और दालें जैसी फसलें उगाती है, जो क्षेत्र की जलवायु और मिट्टी की परिस्थितियों के अनुकूल हैं। पीढ़ियों से चली आ रही पारंपरिक कृषि तकनीकें टिकाऊ प्रथाओं और उपलब्ध संसाधनों के कुशल उपयोग पर जोर देती हैं।

सरगुजा जिले में 1665 परिवारों में 21 (1.26 प्रतिशत) परिवार भूमिहीन है। जबकि 1199 परिवारों में (72.01) जोत का आकार सबसे अधिक है। जिले में जोत का औसत आकार 3.7 हेक्टेयर है। जोत का औसत आकार 3.7 (सारणी 2.6)।

सारणी 2.6

सरगुजा जिला : सर्वेक्षित कंवर जनजाति परिवारों के जोत का आकार, 2024

जोत का आकार	परिवारों की संख्या	प्रतिशत	जोत का औसत आकार (हेक्टेयर में)
भूमिहीन	21	1.26	3.7
<2 हेक्टेयर	1199	72.01	
2-4 हेक्टेयर	258	15.49	
4-8 हेक्टेयर	165	9.91	
≥8 हेक्टेयर	22	1.32	

कुल	1665	100	
-----	------	-----	--

स्रोत :- व्यक्तिगत सर्वेक्षण

व्यावसायिक संरचना

व्यवसाय मानव जीवन को प्रभावित करने सबसे वाला महत्पूर्ण सामाजिक विशेषता है। व्यवसाय से किसी प्रदेश की अर्थव्यवस्था तथा आर्थिक विकास के स्तर का ज्ञान होता है। व्यवसाय से ही जनसंख्या की रोजगार संबंधी स्थिति का बोध होता है। “किसी देश की आर्थिक विकास पर कदाचित ही जनसंख्या का कोई पहलू इतना प्रकाश डालता हो जितना की उसका व्यवसायानुसार अनुपात का अध्ययन है” चन्द्रशेखर (1968)। व्यवसाय से कार्यशील वर्ग के विविध सांस्कृतिक गुण प्रतिबिम्ब होते हैं। जनसंख्या समूह की व्यावसायिक संरचना सदैव आर्थिक जानकारी एवं सामाजिक कारकों से प्रभावित होता है। व्यावसायिक संरचना से किसी क्षेत्र की सम्पूर्ण जनसंख्या में कार्यरत जनशक्ति का ज्ञान होता है। साथ ही कार्य विशेष में संलग्न जनसंख्या की सापेक्षिक स्थिति का ज्ञान भी होता है।

सारणी 2.7

सरगुजा जिला : सर्वेक्षित कंवर जनजाति के व्यावसायिक संरचना, 2024

व्यावसाय	पुरुष		महिला		कुल जनसंख्या	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
कृषक	731	30.01	2	0.77	733	27.19
कृषि श्रमिक	1103	45.28	7	2.69	1110	41.17
अन्य श्रमिक	258	10.59	223	85.77	481	17.84
व्यापार	145	5.95	2	0.77	147	5.45
शासकीय सेवा	199	8.17	26	10.00	225	8.35
कुल	2436	100.00	260	100.00	2696	100.00

स्रोत :- व्यक्तिगत सर्वेक्षण

जिले में 28.91 प्रतिशत जनसंख्या कार्यशील है। कार्यशील जनसंख्या में 36.85 प्रतिशत पुरुष और 2.78 प्रतिशत महिलाएँ हैं। जिले की कार्यशील जनसंख्या में 27.19 प्रतिशत कृषक तथा 41.17 प्रतिशत जनसंख्या कृषि श्रमिक हैं। जिले में व्यापार में 5.45 प्रतिशत तथा 8.35 प्रतिशत जनसंख्या शासकीय सेवा में संलग्न है। इसके अलावा अन्य श्रमिक (खदान, निर्माण कार्य, परिवहन, पशुपालन, आदि) कार्यों में 17.84 प्रतिशत जनसंख्या संलग्न है। उल्लेखनीय है कि प्रत्येक व्यवसाय में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की भागीदारी कम है। इसका अपवाद अन्य श्रमिक है। जिसमें पुरुषों (10.59 प्रतिशत) से महिलाओं का अनुपात (85.77 प्रतिशत) अधिक है (सारणी 2.7)।

पशुपालन कृषि गतिविधियों का पूरक है, जहाँ गाय, बकरी और मुर्गी मुख्य रूप से पाले जाने वाले पशु हैं। ये पशु न केवल दूध, मांस और अंडे जैसे आवश्यक उत्पाद प्रदान करते हैं, बल्कि जुताई और परिवहन जैसे कृषि कार्यों में भी मूल्यवान संसाधन के रूप में काम करते हैं।

वन संसाधनों का उपयोग कंवर जनजाति का छत्तीसगढ़ के वनों से गहरा नाता है, जो उनके जीवनयापन और सांस्कृतिक प्रथाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह जनजाति भोजन, औषधि, निर्माण और शिल्प सामग्री सहित विभिन्न आवश्यकताओं के लिए वन संसाधनों पर निर्भर करती है। जंगली फल, मेवे, कंद और सब्जियाँ इकट्ठा करना उनके आहार का पूरक है, जबकि जंगल से एकत्रित औषधीय पौधों का उपयोग पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों में किया जाता है। वन संसाधनों का सतत उपयोग स्वदेशी ज्ञान और रीति-रिवाजों द्वारा निर्देशित होता है, जो इन महत्वपूर्ण पारिस्थितिक तंत्रों के संरक्षण को सुनिश्चित करता है। इसके अतिरिक्त, शहद, राल और बाँस जैसे गैर-लकड़ी वन उत्पादों का संग्रह कई कंवर परिवारों के लिए अतिरिक्त आय प्रदान करता है।

कारीगरी और व्यापार कारीगरी, कंवर जनजाति की आर्थिक गतिविधियों का एक अभिन्न अंग है, जो उनकी रचनात्मकता और सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है। पारंपरिक शिल्पों में मनके, रस्सी बुनाई और वस्त्र निर्माण शामिल हैं, जो न केवल उपयोगी हैं बल्कि सांस्कृतिक महत्व भी रखते हैं। ये शिल्प अक्सर स्थानीय रूप से प्राप्त सामग्रियों और पारंपरिक तकनीकों का उपयोग करके बनाए जाते हैं, जो जनजाति की कलात्मक विरासत को संरक्षित करते हैं। स्थानीय बाजारों और मेलों में इन दस्तकारी वस्तुओं की बिक्री जनजाति के लिए आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत प्रदान करती है। पड़ोसी समुदायों के साथ व्यापारिक संबंधों ने ऐतिहासिक रूप से वस्तुओं और सांस्कृतिक प्रथाओं के आदान-प्रदान को सुगम बनाया है, जिससे कंवर जनजाति को अपनी आजीविका बनाए रखने और अपनी आर्थिक मजबूती बढ़ाने में मदद मिली है। कंवर जनजाति की आर्थिक गतिविधियों का यह परीक्षण कृषि, पशुपालन और वन संसाधनों पर उनकी निर्भरता के साथ-साथ उनके शिल्प कौशल और व्यापारिक प्रथाओं पर भी प्रकाश डालता है। ये गतिविधियाँ उनके जीवनयापन, आर्थिक स्थिरता और सांस्कृतिक निरंतरता के लिए आवश्यक हैं, जो उनके प्राकृतिक वातावरण में अनुकूलन और फलने-फूलने की उनकी क्षमता को प्रदर्शित करती हैं।

पारिवारिक आय

परिवार का वार्षिक आय जनसंख्या के आंतरिक तथा बाध्य गुणों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। जन्म—दर, मृत्यु—दर, प्रवास, साक्षरता, आदि जनसंख्या के महत्वपूर्ण गुणों पर परिवार के वार्षिक आय का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है।

सरगुजा जिले में औसत वार्षिक पारिवारिक आय रु. 24810.00 है। जिले में 1198 (71.95 प्रतिशत) परिवारों की पारिवारिक आय रु. 20,000.00 से कम है। जबकि मात्र 75 (4.50 प्रतिशत) परिवारों की वार्षिक आय रु. 30,000.00 से 40,000.00 है (सारणी 2.8)।

सारणी 2.8

सरगुजा जिला : सर्वेक्षित कंवर जनजाति के पारिवारिक आय, 2024

वार्षिक आय (रूपये में)	परिवारों की संख्या	प्रतिशत	पारिवारिक औसत आय (रूपये में)
≤ रु. 20,000.00	1198	71.95	24810.00
< रु. 20,000.00 से 30,000.00	253	15.20	
< रु. 30,000.00 से 40,000.00	75	4.50	
≥ रु. 40,000.00	139	8.35	
कुल	1665	100	

स्रोत :- व्यक्तिगत सर्वेक्षण

धार्मिक संरचना

धार्मिक संरचना जनसंख्या का एक ऐसा पक्ष है जो अलग—अलग धर्मों वाले जनसंख्या समूहों की विचारधारा को स्पष्ट करने में सहायता प्रदान करता है। विभिन्न धर्मों वाले क्षेत्रों में धार्मिक—नियम, रीति—रिवाज प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से जनसंख्या की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्रियाओं को प्रभावित करते हैं। कंवर जनजाति की आध्यात्मिक मान्यताएँ तथा उनके प्राकृतिक परिवेश दैनिक जीवन को गहराई से जुड़े हुए हैं। वे जीववादी परंपराओं का पालन करते हैं और मानते हैं कि आत्मा, पेड़ों, नदियों, पहाड़ों और जानवरों जैसे प्राकृतिक तत्वों में निवास करती हैं। यह विश्वदृष्टि प्रकृति के प्रति गहरा सम्मान पैदा करती है और पर्यावरण के साथ सामंजस्य बिठाकर रहने पर जोर देती है। यह जनजाति विभिन्न देवताओं और पूर्वजों की आत्माओं की पूजा करती है, जिनमें से प्रत्येक जीवन और प्रकृति के विशिष्ट पहलुओं से जुड़ा है। ऐसी कहानियाँ जनजाति की सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न अंग हैं जो अस्तित्व में उनकी भूमिका के बारे में उनकी समझ को आकार देती हैं।

निष्कर्ष

सरगुजा जिले की कंवर जनजाति के अध्ययन से एक ऐसे समुदाय का पता चलता है जो अपनी सांस्कृतिक परंपराओं, सामाजिक संरचनाओं और कृषि जीवन शैली में गहराई से निहित है, फिर भी साथ ही सामाजिक-आर्थिक हाशिए की चुनौतियों से जूझ रहा है। अपनी समृद्ध विरासत के बावजूद, जनजाति को शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, आय सृजन और बुनियादी ढांचे तक पहुंच में बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है, जो उनके भौगोलिक अलगाव से और भी जटिल हो जाते हैं। अंतर्विवाही विभाजन और टोटेमिक सेप्ट सहित जटिल सामाजिक संगठन, समुदाय की आंतरिक एकजुटता और सांस्कृतिक लचीलेपन को रेखांकित करता है, साथ ही उनकी आजीविका और शासन के पैटर्न को भी आकार देता है। भौगोलिक दृष्टिकोण से कंवर जनजाति की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों को समझना विकास के परिणामों को आकार देने में स्थान, संसाधन उपलब्धता और सामाजिक नेटवर्क की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देता है।

वित्तीय स्रोत:

यह शोध पत्र भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICSSR), भारतीय सरकार नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित वृहद् शोध परियोजना का एक भाग है, (F. No. 02/38/2022-23/ST/TS/RP, Dated 01.9.2023)

संदर्भ

1. चौधरी, पी.एस. (2023) "भारत में आदिवासी आंदोलन: एक ऐतिहासिक विश्लेषण," ओरिएंट पब्लिकेशन, हैदराबाद, पृ. 109–130.
2. दुबे, एस.सी., (2022) "भारत में आदिवासी जीवन: एक मानवशास्त्रीय अवलोकन," नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, पृ. 45–60.
3. भारत सरकार, (2011) "भारत की जनगणना 2011: अनुसूचित जनजातियाँ," भारत के महापंजीयक, नई दिल्ली, पृ. 176–198.
4. मेहता, आर.के. (2017) "छत्तीसगढ़ की कंवर जनजातियाँ: पारंपरिक प्रथाएँ और आधुनिक चुनौतियाँ," जर्नल ऑफ सोशल स्टडीज, खंड 24, अंक 3, पृष्ठ 211–232।
5. मिश्रा, के.के. (2019) "मध्य भारत में जनजातियों की आर्थिक और सामाजिक संरचनाएँ," ट्राइबल रिसर्च इंस्टीट्यूट प्रेस, रांची, पृष्ठ 89–112।

6. पटेल, ए. के. (2019) 'विकास और विस्थापन': छत्तीसगढ़ में कंवर अनुभव' एकेडमिक पब्लिशर्स, रायपुर, पृष्ठ 67–88।
7. शर्मा, जे. पी., (2011) 'भारतीय जनजातियों का समाजशास्त्र: एक तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य,' रावत प्रकाशन, जयपुर, पृष्ठ 123–145।
8. श्रीवास्तव, एन.आर., (2014) "कंवर जनजातीय कला और शिल्प: ए केस स्टडी," भारतीय मानवविज्ञानी, खंड 39, संख्या 2, पृष्ठ 91–103।
9. तिवारी, बी.के. (2015) "कंवर जनजातियाँ: संस्कृति और सामाजिक गतिशीलता," छत्तीसगढ़ जनजातीय अनुसंधान संस्थान, रायपुर, पृष्ठ 34–50।
10. वर्मा, आर.सी. (2020) "युगों से भारतीय जनजातियाँ," प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, पृ. 56–78.
11. किस्पोट्टा, एस. (2014). छत्तीसगढ़ में आदिवासियों की सामाजिक-आर्थिक दयनीय स्थिति: सरगुजा जिले के धनवार का एक केस स्टडी, सीजी आईओएसआर जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस, 19(6), 26–29.
12. किस्पोट्टा, एस. (2014). छत्तीसगढ़ में आदिवासियों की सामाजिक-आर्थिक दयनीय स्थिति: सरगुजा जिले के धनवार का ए केस स्टडी, CG Academia.edu.https://www.academia.edu/100305666/A_Socio_Economic_miserable_condition_of_the_tribals_in_Chhattisgarh_A_case_study_of_Dhanwar_Surguja_district_C_G
13. पाठक, एम. (2024). छत्तीसगढ़ में सौंता जनजाति का सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक अध्ययन, शोध समीक्षा, 13(10). <https://oldror.lbp.world/UploadedData/15294.pdf>
14. सिंह, आर. के. (2021). 'आदिवासियों का सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समावेश' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी। आरएमडी गर्ल्स पीजी कॉलेज, <https://www.rmdgirlspgcollege.ac.in/alldocuments/792.pdf>
15. त्रिपाठी, एस., और दास, एस. (2020). आदिवासी किसानों के सामाजिक-आर्थिक जीवन पर फसल विविधीकरण का प्रभाव: भारत के पूर्वी घाटों से ए केस स्टडी. arXiv.<https://arXiv.org/abs/2011.07326>
16. त्रिपाठी, एस., और दास, एस. (2020). आदिवासी किसानों की आय पर फसल विविधीकरण का प्रभाव: भारत के पूर्वी घाटों से एक केस स्टडी. arXiv.<https://arXiv.org/abs/2010.10208>
17. धनजल, एस. (2024). छत्तीसगढ़, भारत में आदिवासी किसानों के बीच स्वदेशी ज्ञान, एंट्रोकोम ऑनलाइन जर्नल ऑफ एंथ्रोपोलॉजी, 20(2), 1–11. <https://antrocom.net/wp/wp&content/uploads/2024/12/dhanjal&indigenous&knowledge&tribal&farmer&chhattisgarh.pdf>